प्रश्न-पेपर ५४ — मार्क्स १००

मान्दिरान्त प्र· पाठ १ थी १५

प्र· १ नीचेना प्रश्नोना जवाब लखवो। गमे ते - ५ — १५ मार्क्स

(१) आ बुकनुं नाम जणावी, नामनी सार्थकता जणावी गुप् नो ह्य· कर्माणि ३ पु· जणावो।

(२) दरेक गणना विकरण प्रत्यय लखी, अस् ना गणकार्य विशीष्टकालना रूप लखी, वर्तमान कर्माणि रूप जणावो।

(३) कर्माणीमां कया द्विकर्मक धातुना कया कया कर्मने कइ· कइ विभक्ति थाय ते सदृष्टांत जणावो।

(४) प्रथम पाठनो ७मो नियम शा माटे बनाववो पड्यो ते जणावी दीर्घ ऋ नो जे फेरफार थाय ते जणावो।

(५) परोक्ष भू· काल क्यारे (अपवाद) थाय ते सदृष्टांत जणावो।

(६) परोक्षामां विकारी प्रत्यय पर छतां धातुमां थतां फेरफार जणावो।

प्र· २ [अ] नीचेनाना मांग्या प्रमाणे रूपो लखवो। कर्तरि तथा कर्माणि, गमे ते ५ — १५ मार्क्स

(१) धौ - ५ काल ३ पु· (२) म्ना - ५ काल १ पु·

(३) कृत् - " २ पु· (४) परि + रम् - ह्य· वि· ३ पु·

(५) सम् + स्था - व· ह्य· १ पु· (६) वि + छो - ह्य· आ· २ पु·

[ब] नीचेनाना मागया प्रमाणे कर्तरि रूपो लखवो। गमे ते ७ — २१ मार्क्स

(१) आधि + इ - ५ काल १-२ पु· (५) रू - ५ काल एकवचन

(२) अङ्गी + कृ - " ३ पु· (६) प्र + अन् " ३ पु·

(३) लुष् - " २ पु· (७) आ + हन् " २ पु·

(४) शास् - व· ह्य· १ पु· (८) हा - त्यागकरवो - वि· आ· २ पु·

(९) तृह् - ५ काल एकवचन

प्र· ३ नीचेना रूपोनी साधनिका सुस्पष्ट करो। कोईपण - ५ — १५ मार्क्स

(१) रिच् - आ· २ पु· एकवचन (२) नि + ऋ - ह्य· २ पु· एकव·

(३) मृज् - " " " (४) चक्ष् - व· २ पु· बहुव·

(५) दुह् - आ·पदी आ· २ पु· एकव· (६) कृ - ह्य· ३ पु· एकव·

प्र· ४ नीचेना प्रश्नोना जवाब आपो। गमे ते - ४ — ८ मार्क्स

(१) ग् तथा ह् अंतवाला अनिट् धातुओं जणावो।

(२) अ नो परोक्षामां ए क्यारे थाय ते दृष्टांत आपी घटाड़ो

(३) संप्रसारण एटले शुं ते जणावी संप्रसारण ले तेवा स्वरान्त अने ह् अंतवाला धातुओं लखवो।

(४) आम् परोक्षा सामान्यथी केवा प्रकारना धातुथी थाय ते जणावी थ प्रत्यय पर छतां अनिट् होय तथापि नित्य इ थाय तेवा धातुओं जणावो।

(५) परोक्षाना प्रत्यय जणावी वे तथा व्ये ना थता अंग जणावो।

प्र.5 नीचेनाना मांग्या प्रमाणे परोक्षाना रूप लखो । गमे ते – 8 १२ मार्क्स

(1) मुह् - २पु. एक व. (२) ह्री - १पु. (3) दृ - २पु. (4) म्लै - २पु.

(5) आ+ल्न् - 3पु. (6) स्फुर् - २पु. (7) स्वन् - २पु.

(8) वह् - २पु. (9) वन् - 3पु. (10) भ्रस्ज् - १पु.

प्र. 6 नीचेनानो अन्वय करी अर्थ लखो । गमे ते - 3 6 मार्क्स

(1) सर्वेषाम् (२) यस्याः क्षेत्रं श्लोक

(3) पाठ-13 छेल्लो (4) पाठ - १ छेल्लो

प्र. 7 नीचेना गु. वाक्योनुं सान्धि करी संस्कृत करो । गमे ते - 4 8 मार्क्स

(1) मित्रों ऊपर द्वेष करतां आ भाईओ स्नेहीओवडे तिरस्काराय छे ।

(२) कुवामांथी पाणीने खाली करतां पेला नोकरो आ नगरना राजाना हता ।

(3) रत्नत्रयीनी साधना करती साध्वी म. साहेब संयमना अपूर्व आस्वादने मेळवे छे ।

(4) संस्कृतनो अभ्यास करता (अधि+भू+इ), अमे एक दिवस जरूर चरित्र-वांचन करी आत्मगुणने प्राप्त करवानी शक्तिवाला थइशुं ।

(5) संथारा ऊपर सूता आत्मा कायक्लेश रूप अभ्यंतर तपनी आराधना करी कर्मनी महान् निर्जरा (शी) ना फल ने मेळवे छे ।